

Padma Shri



SMT. JASWANTIBEN JAMNADAS POPAT

Smt. Jaswantiben Jamnadas Popat is a 91 year old Indian businesswoman, who is one of the founders of Shri Mahila Griha Udyog Lijjat Papad, a women's worker cooperative involved in manufacturing of various fast-moving consumer goods. Shri Mahila Griha Udyog Lijjat Papad was established in 1959 with a seed capital of Rs. 80, their cooperative venture now has a turnover of over 11,600 crore. Her organization has employed nearly 45,000 women and has over 93 branches. Smt. Jaswantiben has not just empowered women to earn their livelihood, she inculcated in them a sense of ownership by treating working members as co-owners.

2. Born on 7th July, 1930, Smt. Jaswantiben did not have any knowledge about running a business when she started. But she gathered up courage and perseverance to make a profit out of her business. Further with hard work, her business grew so much that her papad brand is now a popular household name all over the country. During her early business years, she travelled a lot to other places to set up Lijjat Papad and teach other women. She would not be home for 2-3 months at each of her travels. Her husband and family never held her back. She never once looked behind. She knew that she wanted to do this for all the ladies and their families.

3. Smt. Jaswantiben along with her seven friends started this small-scale business in Mumbai's Girgatim area. Dattanibapa and Changanbapa become guide and mentor throughout their whole journey and helped them bloom into what they are today. The initiative was not undertaken with the purpose of setting up a business empire but to contribute financially to their household incomes. Hence, they started the small papad business and initially they had made only 4 packets of papad which they sold to a businessman. Subsequently, the demand for their papads increased a lot and today this papad brand has become a popular household name all over the country. This papad is sold all over the country besides being exported to England, USA, Singapore, Thailand, Netherlands etc. Lijjat Papad has successfully completed the journey of 60 years by chanting the mantra 'Karram Kurram Karram'. Smt. Jaswantiben's main slogan is "Nitti Thi Kaam Karo Toli Fal Jarur Thi Malse" translated as "If you work hard, you will always get the fruit you need".

4. Smt. Jaswantiben is a recipient of numerous honours and awards including Economic Times magazine's Businesswomen of the Year award in 2002 and Sab Parivaar Award.



श्रीमती जसवंतीबेन जमनादास पोपट

91 वर्षीय श्रीमती जसवंतीबेन जमनादास पोपट एक भारतीय कारोबारी हैं, जो तेजी से आगे बढ़ रहे विभिन्न उपभोक्ता वस्तुओं के निर्माण में शामिल, महिला कामगार सहकारी संस्था, श्री महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड़ के संस्थापकों में से एक हैं। श्री महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड़ की स्थापना 1959 में 80 रुपये की प्रारंभिक पूंजी के साथ की गई थी, और अब इस सहकारी उद्यम का कारोबार 11,600 करोड़ से अधिक का हो गया है। उनके इस संगठन ने लगभग 45000 महिलाओं को रोजगार दिया है और इसकी 93 से अधिक शाखाएं हैं। श्रीमती जसवंतीबेन ने न सिर्फ महिलाओं को अपनी आजीविका कमाने के योग्य बनाया है, अपितु कामकाजी सदस्यों को सह-मालिक मानकर उनमें स्वामित्व की भावना पैदा की है।

2. 7 जुलाई, 1930 को जन्मी श्रीमती जसवंतीबेन के पास इस कारोबार के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन उन्होंने साहस जुटाया और लगन के साथ अपने कारोबार से लाभ कमाना शुरू कर दिया। इसके अलावा, कड़ी मेहनत से उनका कारोबार इतना बढ़ गया कि उनका पापड़ ब्रांड अब पूरे देश के घरों में लोकप्रिय हो गया है। अपने शुरुआती कारोबारी वर्षों के दौरान, उन्होंने लिज्जत पापड़ की स्थापना और अन्य महिलाओं को प्रशिक्षण देने के लिए बहुत से दूसरे स्थानों की यात्राएं कीं। वह अपनी प्रत्येक यात्रा के दौरान 2-3 महीने के लिए घर से बाहर रहती थीं। उनके पति और परिवार ने उन्हें कभी नहीं रोका। उन्होंने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। वह जानती थी कि यह कार्य वह सभी महिलाओं और उनके परिवारों के लिए कर रही हैं।

3. श्रीमती जसवंतीबेन ने अपने सात मित्रों के साथ मिलकर मुंबई के गिरगटिम इलाके में यह लघु उद्यम शुरू किया। दत्तानीबापा और चंगनबापा उनकी पूरी यात्रा के दौरान मार्गदर्शक और संरक्षक बने रहे हैं और आज जो कुछ भी हैं, उसे साकार करने में उनकी मदद की। यह पहल व्यापारिक साम्राज्य स्थापित करने के उद्देश्य से नहीं बल्कि पारिवारिक आय में वित्तीय योगदान देने के लिए की गई थी। इसलिए उन्होंने छोटा पापड़ उद्योग लगाया और शुरू में उन्होंने पापड़ के सिर्फ 4 पैकेट बनाए थे जिन्हें एक व्यवसायी को बेचा गया। बाद में उनके पापड़ की मांग काफी बढ़ गई और आज पापड़ का यह ब्रांड पूरे देश के घर-घर में लोकप्रिय हो गया है। इस पापड़ को पूरे देश में बेचने के साथ-साथ इंग्लैंड, अमेरिका, सिंगापुर, थाईलैंड, नीदरलैंड आदि को निर्यात किया जाता है। लिज्जत पापड़ ने 'कर्म कर्म कर्म' मंत्र का जाप करते हुए सफलतापूर्वक 60 वर्ष की यात्रा पूरी की है। श्रीमती जसवंतीबेन का मुख्य नारा है "निति थी काम करो तोली फल जरूर थी मलसे" यानी "यदि आप कड़ी मेहनत करते हैं, तो आपको अपना मनचाहा फल जरूर मिलेगा"।

4. श्रीमती जसवंतीबेन को अनेक सम्मान प्रदान किए गए हैं जिनमें 2002 में इकोनॉमिक टाइम्स पत्रिका का बिजनेस वुमन ऑफ द इयर पुरस्कार और सब परिवार अवार्ड शामिल है।